Session 2018-19

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings during year

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Year of publication	ISBN/ISSN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	DR SAVITA KUMARI SRIVASTAVA	LOKJEEVAN ME RAMKATHA	NARENDRA KOHLI AUR ABHYUDAY KE JANNAYAK RAM SANDARBH: AVASAR KHAND				2018	978-93-87580-74-9	HNB GOVT PG COLLEGE NAINI PRAYAGRAJ	JTS PUBLICATIONS, DELHI
2	DR DEEPAK	BHARTEEY SURAKSHA CHUNAUTIYAN EVAM VIKALP	CHEEN KENDRIT BHARTEEY SURAKSHA CHUNAUTIYAN				2019	978-92-87932-22-7	HNB GOVT PG COLLEGE NAINI PRAYAGRAJ	RACHNAKAR PUBLISHING HAUSE DELHI

(2018-19)

लोकजीवन में रामकथा

मार्गदर्शक/संरक्षक
प्रो. श्यामसुन्दर पचौरी

सम्पादक
डॉ. घनश्याम भारती

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली
इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस प्रोसीडिंग पीयर-रिव्यूड, रिफर्ड बुक
(पूर्व-समीक्षित, सान्दर्भिक पुस्तक)
हिन्दी-विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गढ़ाकोटा, सागर, मध्यप्रदेश

पीयर रिव्यू टीम
डॉ० नीलम जैन, विजिटिंग स्कॉलर, सेंट जोन्स स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका
डॉ. श्रीराम परिहार, पूर्व प्राचार्य, खण्डवा, मध्यप्रदेश
डॉ. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी निदेशक, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
डॉ० सुरेश आचार्य, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर वि.वि., सागर
डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, इलाहाबाद
डॉ० सरोज गुप्ता, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शासकीय कला/वाणिज्य महाविद्यालय, सागर

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०१८
ISBN 978-93-87580-74-9

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

ले-आउट डिजाइन: कविता मो.- ६२८६३६३२७८
आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक: आर्यन डिजिटल प्रेस नई दिल्ली – 110002

LOKJIVAN MEIN RAMKATHA
Edited by Dr. Ghanshyam Bharti

१२. रामचरितमानस में मानव-मूल्य एवं सामाजिक-व्यवस्था ८१
डॉ. निशा जैन
१३. निराला और राम की शक्ति पूजा ८४
डॉ. वर्षा खरे
१४. रामायण एवं रामचरितमानस में जीवन नीति एवं जीवन-मूल्य ८७
प्रो. अजित कुमार जैन, डॉ. प्रवीण श्रीवास्तव
१५. The Maryada Purushottam Ram :
An Ecocritical Reading of the Ramcaritmanas ९३
Dr. Shruti Dubey
१६. मानवीय मूल्यों का आधार : मानस की धर्मभूमि ९७
डॉ. अनिता सोनी एवं डॉ. आशाराम रहड़वे
१७. कर्मप्रधान विश्व रचि राखा (सन्दर्भ रामचरितमानस) १०२
डॉ. छाया चौकसे
१८. रामचरितमानस में समाज की अवधारणा १०६
डॉ. डी.एस. मरावी
१९. वैश्विक जीवन-मूल्य और रामकथा १०९
डॉ. वंदना कैंगरानी एवं प्रवीण यादव
२०. भारतीय समाज और राम का चरित्र ११५
संध्या पाण्डेय
२१. भारतीय संस्कृति में नैतिक, आध्यात्मिक मूल्य एवं उनका पराभव ११९
डॉ. अनुपमा यादव
२२. नरेन्द्र कोहली और 'अभ्युदय' के जननायक 'राम' संदर्भ :
अवसर खंड १२३
डॉ. सविता कुमारी श्रीवास्तव
२३. भारतीय समाज और रामचरितमानस १३३
डॉ. शैलेश आचार्य
२४. मानस और पर्यावरण १३६
डॉ. पद्मा आचार्य

नरेन्द्र कोहली और 'अभ्युदय' के जननायक 'राम' संदर्भ : अवसर खंड

डॉ. सविता कुमारी श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर
भदोही (उ.प्र.)

हिन्दी साहित्य को निरन्तर अपनी लेखनी के माध्यम से नयी-नयी कृतियों से विभूषित करने वाले नरेन्द्र कोहली प्रमुख हस्ताक्षर हैं। लेखन उनकी प्राथमिकता है। लेखन में किसी प्रकार का गतिरोध उन्हें बेचैन कर देता है। उनमें लेखन की जठराग्नि विद्यमान है। परिणामस्वरूप उन्होंने अपने समकालीन लेखकों की तुलना में विविध विधाओं में निरन्तर लिखा है और हिन्दी साहित्य को ज्ञान का विपुल भंडार प्रदान किया है। उनमें वह प्रतिभा है जो उन्हें हिन्दी के अग्रणी साहित्यकारों में ला देती है। उपन्यास, कहानी, व्यंग्य, नाटक, संस्मरण, आलोचना आदि अनेक विधाओं में कोहली जी ने अपना महत् योगदान हिन्दी जगत को दिया है। कोइली जी ने अपनी कृतियों के माध्यम से एक नयी सोच-विचार व नयी दिशा समाज को देने का प्रयास किया है जो आधुनिक परिदृश्य में उपादेय है।

यद्यपि लेखक समाज का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है सो उसके कुछ कृत्य समाज को शोभायमान करने में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। नयी सोच, नये रंग-रूप की नयी दृष्टि समाज को भी नये संदर्भों से जोड़ते हैं। कोहली जी की विशेषता इस दृष्टि से भी है कि वे अपने नये विचारों व प्रस्तुति से आधुनिकता के नये कलेवर के साथ हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। उपन्यास विधा को नये-नये औपन्यासिक स्वरूप में प्रस्तुति कोहली जी की अप्रतिम विशेषता है। इस सन्दर्भ में उनका 'अभ्युदय' उपन्यास हिन्दी साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

रामकथा के माध्यम से श्री नरेन्द्र कोहली पीड़ित जनता के अभ्युदय के लिए जन आंदोलन के पक्षधर के रूप में सामने आये। अभ्युदय वाल्मीकी य रामायण की रामकथा को नए परिप्रेक्ष्य में नए धरातल पर पहचानने का प्रयत्न है। मुख्यतः युगचेतना को अपनी रचना में प्रतिबिंबित करने एवं उसे समाविष्ट करने का प्रयास किया है। श्री रामचन्द्र की गाथा को आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण ग्रंथ की रचना के माध्यम से प्रस्तुत किया जो मानव समाज के लिये था। इसी संदर्भ में संसार के अनेक देशों में अनेक रचनाकारों द्वारा रामकथा लिखी गयी।

भारतीय सुरक्षा चुनौतियाँ एवं विकल्प

आन्तरिक से वैश्विक

India's Security Challenges and Options

– From Internal to Global –

सम्पादक

अजय मोहन श्रीवास्तव

राम अवतार

जगदीश प्रसाद वर्मा

कजक बिहारी पाठक

अजय कुमार मिश्र

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस

दिल्ली

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस
डी 18, गली नं. 9, जगतपुरी विस्तार,
शाहदरा, दिल्ली-110093

© सम्पादक मण्डल

मूल्य : 850.00

ISBN : 978-93-87932-22-7

प्रथम संस्करण : 2019

अक्षरान्वयन : रोहिनी कम्प्यूटर्स

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

वितरक :
शृंखला पब्लिशिंग हाउस
अयोध्या—224001
मो. 9838320095

32. कश्मीर : एक अनसुलझी समस्या
–डॉ सुभाष चन्द्र मौर्य

33. भारत–पाक सम्बन्धों का भविष्य : चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ 156
–अजय कुमार

34. चीन-केन्द्रित भारतीय सुरक्षा चुनौतियां 159
–डॉ. दीपक

35. External Linkages To Unrest In Kashmir 166
-Brig.Gyanodaya

36. Proliferations of Nuclear Weapons And Security in South Asia 174
-Prof. Pradip Kumar Yadav, Jitendra Kumar Yadav

37. China's Keen Interest in String of Pearls : Implications for India 182
-Prof (Dr.) L.K. Mishra

38. The Kashmir : Beginning of Era of Terror 188
- Dr. Rajvir Singh

39. India's Internal Security Challenges And Resonses 208
-Anil Kumar

40. Naxalism : A Biggest Threat of India's Internal Security - 214
- Dr. Arti Yadav

41. China-Pakistan Economic Corridor and India's National Security Concerns 221
-Dr. Laxman P. wagh, Dr. Subhash Jadhav

42. Islamic Terrorism and the Indian Experiences : Some Myths and Realities 231
-Dr. Jagdish P. Verma

43. China-Pakistan Economic Corridor : Implications for India 240
- Pramod Kumar

44. India-EU Counter Terrorism Cooperation 247
- Uday Pratap Singh

45. Counter Insurgency In India : Democracy As A Tool 254
-Avaneesh Kumar Verma, Lalbahadur Ram

46. Internal And External Threats To The National Security of India 263
-Vivek Upadhyay

47. China Pakistan Military Relation In Context of India 268
-Manish Lal Srivastava

48. India's Geographical Aspects and National Security 272
-Vikram Singh

49. Maritime Security Threats and India's Security 276
-Varun Kumar Lauyer

- लेखक परिचय 283

287

34

चीन-केन्द्रित भारतीय सुरक्षा चुनौतियां

–डॉ.दीपक

भारत की तरह किसी भी राष्ट्र के क्षेत्रिय सुरक्षा परिदृश्य में उसके पड़ोसी राष्ट्रों से सम्बन्धों की प्रकृति एवं स्थिति का बड़ा महत्व होता है। यदि सम्बन्ध मधुर और परस्पर मैत्रीपूर्ण है तो सुरक्षा परिदृश्य शांत एवं स्थायी होता है, परन्तु यदि सम्बन्ध तनावपूर्ण एवं शत्रुतापूर्ण है तो सुरक्षा परिदृश्य [illegible] एवं सामरिक आधारों की दृष्टि से संघर्षपूर्ण एवं अस्थिर हो जाता है। चीन, भारत का एक ऐसा ही पड़ोसी देश है जिसके साथ सम्बन्धों का अतीत बहुत सुखद नहीं रहा है वास्तविकता तो यह है कि वर्तमान में भी एशिया की इन दो महाशक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों में अतीत की कड़वाहट एवं संदेह कायम है जिसे "सहयोग जनित प्रतिद्वन्द्विता" भी कह सकते हैं। चीन एक तरफ तो भारत के साथ शांति एवं सौहार्द के माहौल में पारस्परिक विकास की बात करता है वहीं दूसरी तरफ उसकी आड़ में अपने भू–सामरिक, भू–राजनीतिक एवं भू–आर्थिक लक्ष्यों को भी आक्रमक तेवरों से पूरा करना चाहता है। ऐसी स्थिति में प्रस्तुत शोध पत्र में भारत–चीन सम्बन्धों की प्रकृति एवं वर्तमान स्थिति से उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों तथा इससे निपटने हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाओं पर भारतीय नीति निर्धारकों एवं [illegible] का ध्यान आकृष्ट करने का एक एक लघु प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

बदल रहे अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश के परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि भारत और चीन के सम्बन्ध उत्तरोत्तर उन्नति की ओर बढ रहे है तथा ऐसा प्रतीत भी होता है कि दोनों राष्ट्र पिछले कुछ समय से आपसी मतभेदों को दर–किनार करके पारस्परिक सम्बन्धों को मजबूत करने हेतु प्रयत्नशील है तथा दोनों ही देश भूमण्डलीकरण से होने वाले लाभों को अपनी आर्थिक प्रगति के लिए अपरिहार्य मान रहे हैं, परन्तु इसे चीन की कूटनीतिक सफलता ही कही जायेगी कि उसने सीमा विवाद जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण मुददे पर भारत को उलझाते हुए केवल आर्थिक और तकनीकी सहयोग तक ही सीमित कर रखा है। इस प्रकार की स्वार्थपरक आर्थिक एवं कूटनीतिक समझौतों एवं उच्च स्तरीय आधिकारिक यात्राओं को भारत–चीन सम्बन्धों की कसौटी नहीं मानी जा सकती। आर्थिक एवं व्यापारिक तर्क यदि इतना हो असरदार होता तो चीन ही नहीं पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल के साथ भी हमारे सम्बन्ध तनावरहित और सौहार्दपर्ण ही रहते। भारतीय नीति निर्धारकों को इस बात पर ध्यान देना होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर शायद ही कोई ऐसा विषय या मुददा हो चाहे वह पर्यावरण के संरक्षण का मुददा हो, सुरक्षा परिषद में भारत की दावेदारी का मामला हो या भारत में आतंकी गतिविधियाँ चलाने वाले तथा भारत पर आतंकी हमलों के जिम्मेदार पाकिस्तान में बैठे आतंकी आकाओं पर प्रतिबंध लगाने की बात हो चीन की स्वछन्दता ने बहुराष्ट्रीय सहमति को बाधित किया है।

निःसन्देह चीन के पास राष्ट्रीय शक्ति के सृजक सभी तत्व विद्यमान है और अपनी इसी राष्ट्रीय शक्ति के बल पर चीन सम्पूर्ण एशिया में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है किन्तु अपने ऐसी क्षेत्रीय राजनीतिक उददेश्यों की प्राप्ति में भारत उसे किसी न किसी प्रकार से बाधक प्रतीत होता क्योंकि भारत सम्पूर्ण एशिया में चीन के समान ही जनसंख्या, शक्ति और प्राकृतिक साधनों में उसका